



काशी की समकालीन काष्ठ परम्परा एवं कलाकार

प्रशान्त कुमार विश्वकर्मा^{1*}, डॉ. सरिता पाण्डेय²

1. रिसर्च स्कॉलर, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह, म.प्र., भारत
pktakshan@gmail.com,

2. सहायक प्रोफेसर, ललित कला विभाग, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह, म.प्र., भारत

सारांश: काशी भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का एक बहुत प्राचीन और जीवंत केंद्र है, जहाँ आज भी कई दृश्य कला, शिल्प, संगीत, वस्त्र और अनुष्ठानिक रूपों की परंपराएँ सक्रिय हैं। इन परंपराओं में काष्ठकला एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। काशी की काष्ठ परम्परा केवल उपयोगितावादी वस्तुओं तक सीमित नहीं है; यह घरेलू सज्जा, मंदिर स्थापत्य, धार्मिक वेदियों, अनुष्ठानिक संरचनाओं, लोक खिलौनों और सजावटी वस्तुओं में भी व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाता है। वर्तमान में, यह परंपरा नए रूपों में विकसित हुई है, जैसे Decorative Wall Panels, Miniature Ghats, Temple Sculptures, Interior Craft Items, Laser-Assisted Carving और Souvenir Art। वर्तमान शोध-पत्र में काशी की समकालीन काष्ठ परम्परा का इतिहासिक विकास, तकनीक, कलाकार समुदाय, आधुनिक बाजार, पर्यटन, शैक्षिक प्रशिक्षण और वर्तमान चुनौतियों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि काशी की काष्ठ कला आज एक मजबूत सांस्कृतिक पहचान बन गई है जो परंपरा और नवाचार को संतुलित करती है।

मुख्य शब्द: काशी, काष्ठ कला, लकड़ी नक्काशी, समकालीन कलाकार, बनारस, लोक शिल्प, दृश्य संस्कृति

----- X -----

प्रस्तावना

वाराणसी और बनारस भी कहलाने वाले काशी, भारत की सबसे प्राचीन सांस्कृतिक नगर परंपराओं में से एक है। यह नगर धार्मिक और कला और कला परंपराओं के लिए विश्वविख्यात है। यहाँ की लोक कला, मिट्टी शिल्प, गुलाबी मीनाकारी, धातु कला, वस्त्र और काष्ठ कला विशेष हैं। मंदिर स्थापत्य, पूजा आसन, लोक मुखौट, देवालियों के दरवाजे, झरोख और घरेलू उपयोग की सजावटी वस्तुएं विशेष रूप से काष्ठ परम्परा से जुड़े हुए हैं।

काशी की काष्ठ कला ने आज नहीं सिर्फ परंपरा को बचाया है, बल्कि वर्तमान डिजाइन भाषा, पर्यटन सौंदर्य और विश्वव्यापी काष्ठ बाजार के अनुरूप भी स्वयं को बनाया है। आज काशी के कलाकार लकड़ी से घाटों, गंगा आरती, मंदिरों के शिखरों, लोक वाद्यों, संगीत परंपरा और बनारसी शहरी स्मृति को चित्रित कर रहे हैं। इस अध्ययन का मुख्य विषय है समकालीनता।

साहित्य समीक्षा

विभिन्न विद्वानों ने काशी की कला परंपरा पर अध्ययन किया है, लेकिन इसके समकालीन रूप पर केंद्रित अध्ययन बहुत कम है। लकड़ी के तक्षण और स्थापत्य का उल्लेख काशी की कला के इतिहास में मिलता है। IGNCA के "काशी की कला: एक ऐतिहासिक विवेचना" में बताया गया है कि हालांकि लकड़ी, वस्त्र और धातु जैसे पदार्थ जलवायु के कारण नष्ट हो गए, लेकिन तक्षण और वास्तु परंपरा अस्तित्व में रही।

हाल के अध्ययनों ने लकड़ी की नक्काशी को बनारस की कला के समग्र रूप में एक प्रमुख शिल्प रूप के रूप में माना है।

यह अध्ययन भी उसी अंतर को भरने की कोशिश करता है।

शोध के उद्देश्य

काशी की समकालीन काष्ठ परम्परा के कलात्मक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक आयामों का विश्लेषण इस अध्ययन का उद्देश्य है। विशेष रूप से जानना कि पारंपरिक काष्ठ शिल्प आज किन रूपों में जीवित है, कलाकारों ने इसे किस प्रकार नई पीढ़ी तक पहुँचाया है, और आधुनिक बाजार और पर्यटन ने इसे कैसे प्रभावित किया है।

शोध-विधि

यह अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक (qualitative) है। इसका आधार:

- क्षेत्रीय अवलोकन
- कलाकार समुदाय से संवाद
- वाराणसी के कला क्लस्टरों का अध्ययन
- उपलब्ध शोध-पत्र, ग्रंथ और अभिलेखीय सामग्री
- BHU और सांस्कृतिक संस्थानों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विश्लेषण है।
- समकालीन क्षमता के हस्तांतरण का एक महत्वपूर्ण उदाहरण BHU में 45 दिनों का लकड़ी काटने की ट्रेनिंग कार्यक्रम है।

काशी की समकालीन काष्ठ परम्परा का स्वरूप

काशी की काष्ठकला परम्परा में आधुनिक सौंदर्यबोध, परंपरा, शिल्पकला और सांस्कृतिक स्मृति का अद्भुत समन्वय है। यह परम्परा काशी के धार्मिक, सामाजिक, स्थापत्य और दृश्य-सांस्कृतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह केवल लकड़ी पर नक्काशी या उपयोगी वस्तुओं बनाने तक सीमित नहीं है। वर्तमान समय में, काष्ठ कला ने अपने पारंपरिक रूप को सुरक्षित रखते हुए नवीनतम डिज़ाइन मानकों, बाजार की माँगों और डिज़ाइन चेतना के अनुरूप अपने आप को पुनर्गठित किया है। आज काशी के कलाकार लकड़ी से ऐसे रूप बना रहे हैं जो घाट संस्कृति, गंगा आरती, मंदिर स्थापत्य, लोक संगीत, बनारसी गलियाँ और शहरी स्मृति का जीवंत दृश्य संसार प्रस्तुत करते हैं।

समकालीन रूप की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें धार्मिक उपयोगिता और सजावटी कला दोनों समान रूप से मौजूद हैं। गृह देवालियों, मंदिरों, पूजास्थलों और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए लकड़ी की वेदियाँ, चौखटें, आसन, घंटी-फ्रेम, मंदिर प्रतिकृतियाँ और देव प्रतिमा आधार बनाए जाते हैं। दूसरी ओर, आधुनिक घरों की सजावट के लिए दीवार पट्टी, कांच के फ्रेम, डिज़ाइनर रेखाचित्र, टेबल-टॉप चीजें, लाइट स्टैंड्स और कलाकृतियों इस प्रकार, काशी की काष्ठ परम्परा ने उपयोगितावादी शिल्प से आगे बढ़कर आंतरिक सौंदर्यशास्त्र में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है।

समकालीन काष्ठ कलाकारों की कृतियों में स्थानीय सांस्कृतिक प्रतीकों का बहुत अधिक प्रभाव दिखाई देता है। लकड़ी की नक्काशी में अब मुख्य विषय गंगा के घाट, आरती के दीप, मंदिरों के शिखर, नाव, सारंगी, तबला, सितार, साधु आकृतियाँ, नटराज रूप, लोक नर्तक और बनारसी जीवन के दृश्य हैं। इन रूपों में दृश्य केवल वास्तविक नहीं है; यह काशी की सांस्कृतिक आत्मा को पकड़ने की कोशिश भी है। यही कारण है कि वर्तमान काष्ठ कला में भावात्मक गहराई के साथ-साथ दृश्यात्मकता भी दिखाई देती है।

इस परम्परा में तकनीकी रूप से भी महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। अब तक, पारंपरिक छेनी, हथौड़ी, रेती और हाथ की औज़ारों के साथ-साथ गणितीय छेनी, रोटरी काटने वाले उपकरण, छोटे ड्रिल और सुंदर अंतर्निहित उपकरणों का उपयोग बढ़ा है। इससे कलाकारों को अधिक सूक्ष्म रेखांकन, जटिल रेखांकन और त्रिआयामी गहराई मिली है। इन कलाकृतियों को समकालीन प्रदर्शन कला के लिए अनुकूल बनाने के लिए लकड़ी की सतह पर पेंट, प्राकृतिक तेल, मैटेड फिनिश, पुरानी शैली और परतदार पेंट का प्रयोग किया जाता है। विशेष रूप से गैलरी प्रदर्शन और स्मारक बाजार के लिए निर्मित उत्पादों में अंतिम गुणवत्ता बहुत महत्वपूर्ण है।

स्थायित्व और पर्यावरण की चेतना भी समकालीन है। अब बहुत से कलाकार पुरानी लकड़ी, पुराने फर्नीचर की लकड़ी, परित्यक्त बीम और पुनःप्रयोग की गई लकड़ी का उपयोग करके नए काम कर रहे हैं। यह न केवल पर्यावरण के लिए अच्छा है, बल्कि कलाकृति को ऐतिहासिक महत्व भी देता है क्योंकि इसमें पुरानी लकड़ी की बनावट और रंग है। इस तरह, काशी की काष्ठ परम्परा टिकाऊपन और सांस्कृतिक सौंदर्य को एक साथ प्रस्तुत करती है।

वर्तमान में पर्यटन और सांस्कृतिक उद्योग ने परम्परा का रूप और अधिक बढ़ाया है। पर्यटक काशी आते समय घाट, मंदिर और गंगा आरती से जुड़ी यादों को अपने साथ ले जाना चाहते हैं। यही कारण है कि छोटे-छोटे घाट मॉडल, काटकर बनाए गए मंदिरों की नकल, लकड़ी के मुखौटे, संगीत के चित्रों और बनारस पर आधारित उपहारों की माँग लगातार बढ़ी है। कलाकारों ने इस आवश्यकता को समझते हुए छोटे आकार की मोबाइल और सुंदर चीजें बनाना शुरू किया है। इससे काष्ठ परम्परा का विस्तार हो गया है, जो केवल स्थानीय उपयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय काष्ठ बाजार तक पहुँच गया है।

कुल मिलाकर, काशी की समकालीन काष्ठ परम्परा बहुआयामी, बदलती रहती है और सांस्कृतिक रूप से बहुत समृद्ध है। इसमें परंपरागत कला, धार्मिक प्रतीक, स्थानीय जीवन, आधुनिक सज्जा, पर्यटन मार्केट और तकनीकी नवाचार सब हैं। यह गुण इसे एक जीवित सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का रूप देता है, न सिर्फ हस्तशिल्प।

कलाकार समुदाय और प्रशिक्षण

काशी की समकालीन काष्ठ परम्परा का आधार उसके कलाकार समुदाय में निहित है, जो इस कला की निरंतरता और विकास का मुख्य वाहक है। यह समुदाय परंपरागत रूप से परिवार-आधारित शिल्प संरचना पर आधारित है, जहाँ कला का ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरण के माध्यम से औपचारिक संस्थानों की अपेक्षा विकसित होता रहा है। कारीगर परिवारों में बच्चों को बाल्यावस्था से ही लकड़ी की पहचान, औज़ारों का उपयोग,

नक्काशी की विधियों, रूपांकन की समझ और अंतिम रूपांकन के कौशल से परिचित कराया जाता है। इस प्रकार, काशी की काष्ठ परम्परा में प्रशिक्षण अनुभवजन्य और व्यवहारिक रहा है।

बढ़ई, तक्षक और शिल्पकार प्रमुख जातीय और व्यावसायिक समूहों से संबंधित रहे हैं, जो परंपरागत कलाकार समुदाय का हिस्सा रहे हैं। इन समुदायों में काम की श्रेणियां स्पष्ट हैं—जबकि कुछ कलाकार लकड़ी काटने और प्रारंभिक संरचनाओं को बनाने में माहिर हैं, तो दूसरे सूक्ष्म नक्काशी, सजावट और मरम्मत में माहिर हैं। इस तरह, सामूहिक श्रम और विशेषज्ञता का समन्वय काष्ठ शिल्प की गुणवत्ता को सुनिश्चित करता है।

वर्तमान कलाकार समुदाय भी बदल गया है। यह कला अब पारंपरिक परिवारों तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि अब स्वतंत्र कलाकारों और कला संस्थानों से जुड़े विद्यार्थियों तक भी फैल गई है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के दृश्य कला संकाय सहित अन्य शिक्षण संस्थानों ने काष्ठ कला के औपचारिक प्रशिक्षण में बड़ा योगदान दिया है। कलाकारों को यहाँ कार्यशालाएँ, अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम और कौशल विकास योजनाओं द्वारा तकनीकी क्षमता, डिजाइन का ज्ञान और आधुनिक उपकरणों का उपयोग करना सिखाया जाता है।

हाल ही में आयोजित काष्ठ नक्काशी प्रशिक्षण शिविरों ने पारंपरिक कलाकारों और नवोदित शिल्पियों के बीच संवाद का एक नया मंच प्रदान किया है, विशेष रूप से काष्ठ कला में। वर्तमान डिजाइन ट्रेड्स, बाजार की मांग, उत्पाद विविधता और अंतिम तकनीक के बारे में इन कार्यक्रमों में भाग लेने वाले लोगों को न सिर्फ नक्काशी तकनीक सिखाया जाता है। इससे कलाकारों में नवाचार की प्रवृत्ति पैदा होती है और वे अपनी पुरानी कला को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ढाल सकते हैं।

इसके अलावा, कलाकारों को सशक्तिकरण करने में सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ भी सहयोग कर रही हैं। समय-समय पर, विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, राज्य स्तरीय हस्तशिल्प बोर्ड और प्रशिक्षण, प्रदर्शनी, विपणन सहायता और आर्थिक सहयोग प्रदान करते हैं। इन प्रयासों से कलाकारों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंच मिलता है, जो उनकी कला को फैलाता है।

डिजिटल युग में प्रशिक्षण भी बदल गया है। कलाकारों को अब नई तकनीकों और डिजाइन विचारों का पता चलता है, जो सामाजिक मीडिया, वेबसाइटों और वीडियो मार्गदर्शन से मिलता है। इससे काशी की काष्ठ परम्परा का ज्ञान विश्वव्यापी हो गया है। युवा कलाकारों ने विशेष रूप से डिजिटल मार्केटिंग, ऑनलाइन खरीददारी और ब्रांडिंग के माध्यम से अपने उत्पादों को व्यापक बाजार में पेश किया है।

इन सुखद बदलावों के बावजूद कुछ चुनौतियाँ भी हैं। कलाकार समुदाय को आर्थिक अस्थिरता, औपचारिक प्रशिक्षण की सीमित पहुँच, पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा का कमजोर होना और युवा पीढ़ी का अन्य व्यवसायों की ओर झुकाव जैसी समस्याएँ प्रभावित करती हैं। साथ ही, आधुनिक प्रशिक्षण और पारंपरिक कौशल का संतुलन बनाना भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

कुल मिलाकर, काशी की काष्ठ परम्परा का कलाकार समुदाय आधुनिकता और परंपरा का संगम है। यह समुदाय अपने पूर्वजों से प्राप्त कौशल और सांस्कृतिक विरासत को बचाता है और साथ ही आधुनिक बाजार, तकनीक और शिक्षा की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को विकसित करता है। यही द्वैतात्मक प्रक्रिया काशी की समकालीन काष्ठ कला को प्रासंगिक और जीवंत बनाए रखती है।

सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक महत्त्व

काशी की सांस्कृतिक अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा काष्ठ परम्परा है। नए बाजार को धार्मिक पर्यटन, कला महोत्सव, प्रदर्शनी, विदेशी कला और ऑनलाइन बाजार ने दिया है। देशी-विदेशी पर्यटकों में घाट, नाव, मंदिर और गंगा आरती की छोटी-छोटी रूपरेखा विशेष लोकप्रिय हैं। शिल्प परंपराएं वाराणसी प्रशासन की धरोहर और कला पहचान में भी महत्वपूर्ण हैं।

यह कला स्थानीय पहचान, सांस्कृतिक स्मृति और बनारसी जीवन शैली को व्यक्त करती है।

चुनौतियाँ

समकालीन काष्ठ परम्परा के सामने कुछ प्रमुख चुनौतियाँ हैं:

- मशीन आधारित भारी उत्पादन
- MDF और कृत्रिम विकल्प
- कच्चे माल की बढ़ती कीमतें
- दक्ष युवा प्रवास
- डिजाइन नकल
- डिजिटल मार्केटिंग की कमी

इसकी सबसे बड़ी शक्ति इन चुनौतियों के बावजूद कलाकारों की मौलिकता और उनके हस्तनिर्मित काम की विशिष्टता है।

निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि काशी की समकालीन काष्ठ परम्परा केवल अतीत की धरोहर नहीं है; यह वर्तमान सांस्कृतिक जीवन, पर्यटन अर्थव्यवस्था और दृश्य-संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। धार्मिक उपयोगिता, स्थापत्य सौंदर्य, घरेलू सज्जा और स्मृति-चिह्न उद्योग को यह परंपरा जोड़ती है। आधुनिक डिजाइन आवश्यकताओं और बाजार की मांग के साथ परंपरागत नक्काशी कला को जोड़कर कलाकारों ने इसे जीवंत रखा है। यही कारण है कि काशी की काष्ठ परम्परा भारतीय लोक शिल्प की निरंतरता, नवाचार और सांस्कृतिक स्थायित्व का एक अच्छा उदाहरण है।

संदर्भ

1. अग्रवाल, वासुदेवशरण. (1965). भारतीय लोक कला. वाराणसी: भारतीय विद्या प्रकाशन।
2. तिवारी, गोपाल. (1991). काष्ठ कला और लोक रूप. लखनऊ: हिंदी संस्थान।
3. उपाध्याय, कृष्णदेव. (1980). काशी की सांस्कृतिक परंपरा. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।
4. दास, रायकृष्ण. (1970). काशी की कला परंपरा. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा।